आखिर एक हिन्दू को हिन्दू धर्म से ज्यादा जाति प्यारी क्यों होती है?

एक भद्र परन्तु शायद कट्टरवादी शख्सीयत ने पूछा कि आखिर एक हिन्दू को हिन्दू धर्म से ज्यादा जाति प्यारी क्यों होती है?

वैसे तो मैं धर्म-निरपेक्ष इंसान हूँ इसलिए इन चीजों पर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रियात्मकता नहीं रखता| लेकिन फिर भी महानुभाव, जवाब के तौर पर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मुज़फ्फरनगर जैसे दंगों में असली मैदान छिड़ने से पहले जो मामला हिन्दू-बनाम-मुस्लिम दिखाया जाता है, वो ही बाद में जाट-बनाम-मुस्लिम बना के बताया जाता है| यानि बाकी हिन्दू परिदृश्य से ही गायब? अब तमाम तरह की मीडिया रिपोर्ट्स ने तो यही बना दिया इसको, और ख़ास बात किसी गैर-जाट हिन्दू ने इसका विरोध भी नहीं किया, कि जाट भाइयों को अकेला क्यों दिखा रहा है मीडिया? जब मामला शुरू से हिन्दू-बनाम-मुस्लिम था तो अब भी हिन्दू-बनाम-मुस्लिम ही दिखाएँ? ... क्या देखा आपने किसी हिन्दू को इसका विरोध दर्ज करवाते हुए? ... अत: कारण आपके आगे स्प्ष्ट है महाशय कि हिन्दू में एकता क्यों नहीं होती और इनको अपने धर्म से ज्यादा जाति क्यों प्यारी लगती है|

मुज़फ्फरनगर दंगे से पहले तो मैं भी कई बार खुद को कोसा करता था कि मैं धर्म-निरपेक्ष क्यों हूँ, लेकिन इस दंगे ने कट्टरता का चेहरा दूध-का-दूध और पानी-का-पानी की तरह निखार के रख दिया और आज मैं खुश हूँ कि मैं मेरे बुजुर्गों की दी हुई धर्म-निरपेक्ष परिपाटी से विचलित नहीं हुआ|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 26/01/2014